सैयद अब्दुल मलिक
Syed Abdul Malik

असमिया में लिखने वाले अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार सैयद अब्दुल मलिक को अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित करते हुए साहित्य अकादेमी गौरव का अनुभव कर रही है। आपके पचास अनूठे उपन्यासों में आम जीवन का सूक्ष्म चित्रण है। आप जीवन की सहज सचाइयों का बयान करते हैं जो कि गूढ़ चिन्तन से सावधानीपूर्वक बचकर निकल जाती हैं। अध्यापक, विद्वान् और सर्जक के रूप में आपकी प्राथमिकताएँ स्पष्ट और असंदिग्ध हैं।

सैयद अब्दुल मलिक का जन्म 1919 में असम में गोलाघाट के निकट नहरनी गाँव में हुआ। अंग्रेज़ी का गहन अध्ययन करने के पश्चात् आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से असमिया में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। स्कूल में आपने फ़ारसी में विशिष्टता हासिल की और कुछ समय तक जोरहाट कॉलेज में फ़ारसी का अध्यापन किया। 1951 में लेक्चरर के रूप में जे.बी. कॉलेज में आने से पहले आपने आबकारी विभाग में काम किया, आकाशवाणी गुवाहाटी-शिलांग से संबद्ध रहे और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सेना में कुछ समय तक 'सिविल सेंसर' के रूप में कार्य किया। 1976 में आप जे.बी. कॉलेज से असमिया के प्रोफ़ेसर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। उसी वर्ष आप राज्यसभा के लिए नामित किये गये।

अब्दुल मलिक के उपन्यास सर्जनात्मक प्रलेखन का उपयोग करते हैं और शुद्ध, निर्वैयक्तिक तथ्यों से आबद्ध हुए बग़ैर वे ऐतिहासिक रूपक के स्तर तक जाते हैं। मूलतः यही चीज़ है जिसने आपको अपने साठ वर्षों के रचनात्मक जीवन में हमेशा 'समकालीन' बनाये रखा है। अपने आप में यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है। जो कुछ आपने लिखा है, उसी में हम आपकी तलाश करते हैं, उसमें नहीं जो आप पर लिखा गया है। सब कुछ के बावजूद आप एक अंतरंगी (इनसाइडर) के रूप में समकालीन स्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं और कभी विचारों को अवरुद्ध या सीमित करने का प्रयास नहीं करते। उदाहरण के लिए *रूपबोरीर पलास* में आप आप्रवास के तथ्य और परिणाम को प्रस्तुत करते हैं, जब कि *सिले सार पै* (पत्थर जागते हैं) में मार्क्सवाद के साथ अपने सम्बन्धों की जटिलता की वैयक्तिक अनुकूलता एवं प्रतिकूलता की जाँच-पड़ताल की गई है। अपने अंतरंगी के दृष्टिकोण में आपका मानना है कि व्यक्ति को प्रयास करना चाहिए और अपने संदेश को रखना चाहिए, जैसा कि वह स्वयं कहता है और ऐसा किसी अभिभावी वैचारिक प्रतिबद्धता के कारण न हो। आपकी कहानी 'एघांतर इतिहास' (एक घंटे का इतिहास) सीधे-सीधे सामाजिक-आर्थिक मुद्दों को उठाती है और अपवाद से कुछ अधिक है। ऐसी रचनाओं में विडम्बना प्रभावी है। 'बीभत्स वेदना' में वैयक्तिक अनुकूलता की दृष्टि से आप विभाजन के दुःख और पीड़ा का पुनर्सर्जन करते हैं। चाहे आपका पहला उपन्यास *ओमला घरेर धुलि* हो अथवा बाद का *रथर चोकोरी घुरे*, आपके समाजवादी आदर्श और विचार एक उदारवादी मानवइतावाद में

The Sahitya Akademi is privileged to confer its highest honour of Fellowship today on Syed Abdul Malik, one of the most significant Indian novelists writing in Assamese. His fifty odd novels evoke the minutiae of common living and assert the simple truths of life that almost studiously sidestep metaphysical speculation. Teacher, scholar and creator that he is, his priorities are clear and unequivocal.

Syed Abdul Malik was born in 1919 in village Naharani, near Golaghat in Assam. After majoring in English he did his Master's in Assamese from the Calcutta University. At school he had excelled in Persian and taught Persian at Jorhat college for a time. Before joining the J.B. College as lecturer in Assamese in 1951, Abdul Malik had served the Excise Department, was associated with the All India Radio, Guwahati-Shillong and had a stint as a civil censor with the Army during World War II. He retired as Professor of Assamese in J.B. College in 1976. He was nominated to the Rajya Sabha that year.

Abdul Malik's novels exploit creative documentation and they aspire to the level of historical tropes without being circumscribed by mere, impersonal facts. It is primarily this which has always kept him 'contemporary' for the sixty odd years of his creative life. This in itself is no mean achievement. We discover him in what he has written and not really in what has been written on him. After all, he responds to the contemporary situation as an insider and never attempts a frozen, atemporal encapsulation of ideas. In *Rupaboreer Palas* (The Silt of the Rupaboree), for instance, he presents the fact and fate of immigration, while in *Sile Saar Pai* (The Stone Awakens), the personal pros and cons of his involvement with Marxism are explored. It is in his insider's viewpoint that one may try and situate his message, as he himself says, and not in any overriding ideological commitment. His short story 'Eghantar Itihas' (Annals of an Hour) addresses socio-economic issues directly and is more of an exception. Irony is dominant in such creations. 'Beebhatsa Bedana' (Monstrous Pain) recreates the sorrows and agonies of Partition from individual vantages. Whether in his first novel *Omala Gharar Dhuli* (Dust of the Playroom) originally called *L.M.C.* cryptically, or in the later *Rathor Chokori Ghure* (The Chariot Rolls) his socialist ideals and

सन्निविष्ट हो जाते हैं।

इसीलिए, नैराश्य की भाषा आप के लिए नहीं है। केवल प्रचलित अकेलापन आपको लुभा नहीं सकता। अपनी गौरवपूर्ण यात्रा में प्रतिभाशाली लोगों के अपेक्षित अकेलेपन को स्वीकार करते हुए भी आप अपने को अकेला नहीं महसूस करते। आप अपने परिवेश, अपने समाज के साथ एकमेक है। "मुझे वे लोग अच्छे लगते हैं" आप कहते हैं, "जो जीवन से गहरे जुड़े हुए हैं, वे जो जीवित प्राणियों के दुखों का प्रत्युत्तर दे सकते हैं।" आप प्रकृति से एकमेक हैं और नदी के स्पष्ट आकर्षण में सहज आनंद प्राप्त करते हैं। आपके कथा साहित्य में नदी और वर्षा प्रमुखता और विशिष्टता लिए आते हैं, जैसे कि बाढ़ आती है और कभी-कभी सूखा।

आप कहते हैं कि जो चीज़ आपको ज़िन्दा रखती है, वह है आत्मा का आश्वासन। आप असमिया कथा साहित्य के सर्वोच्च आलोचनात्मक यथार्थवादी हैं जो कि गाँव और शहर, मुसलमान और हिन्दू की सजातीय दुनिया से पूरी तरह परिचित है। सम्भवतः आपकी रोमांटिक कहानियाँ –तथाकथित राजनीतिक रूप से प्रतिबद्ध लेखन अथवा रिपोर्टों के नीरस अमूर्तीकरण की अपेक्षा इतिहास और समाज की सचाई को बेहतर ढंग से अभिव्यक्त करती हैं। आप संघर्ष-पीड़ित लोगों को आश्वस्ति प्रदान करते हैं जो उनसे कोसों दूर है और पलायन से बचाते हैं। आपकी ऐतिहासिक समझ और परम्परा का ज्ञान आपकी भाषा और शब्दावली में सन्निहित हैं जो कि लोक से मात्र एक सीढ़ी के फ़ासले पर है। अपने समय और लोगों की सभी प्रथाएँ और रीति-रिवाज आप के लिए मूल्य रखते हैं और आप समुत्सुक भाव से उनका अनुसरण करते हैं। समाज का द्वंद्व और सहभाव आपके लेखन में उजागर हुआ है और आपके पात्र उसके द्वारा गढ़ जाते हैं।

अब्दुल मलिक स्वयं को अपने चरित्रों से श्रेष्ठ नहीं मानते। अतः आपके यहाँ कुछ भी न हास्यास्पद होता है, न पुराना। *सूरजमुखीर स्वप्न का* कंजूस सफ़िआत अथवा सनकी भलामानुष चंद्र, *नल-बिरिन-खागोरि* का डेका-गोसाईं, *रूपा-बोरीर पलास* के कामरान जैसे चरित्र उनके कथा जगत को भरा-पूरा बनाते हैं। आपके यहाँ ढले-ढलाए चरित्र नहीं हैं। अब्दुल मलिक कभी भी बहुत अधिक प्रयोगशील नहीं रहे। अपनी कहानियों को सहज रूप से कहने में आपको ख़ुशी होती है। आप कथा की एकरेखीय गति में विश्वास रखते हैं। परिवेश परिवर्तित होता है और परिवेश के साथ पात्र। यहाँ-वहाँ कोई आपमें कुछ पारिवारिक समानता देख सकता है, लेकिन वे सभी आपकी कहानियों की तरह भिन्न हैं।

आपके उपन्यास और कहानियाँ, समकालीन यथार्थ से टकराते हुए समय की माँग को रद्द करते हैं और समकालीन क्लासिक जैसे बने रहते हैं। अब्दुल मलिक असमिया के सबसे लोकप्रिय उपन्यासकार हैं और आपकी सभी पुस्तकें हर उम्र और रुचि के पाठकों को आकर्षित करती रही हैं। 15 वीं सदी के असम के महान संत कवि शंकरदेव के जीवन और कार्यों पर आपने एक उपन्यास लिखा है, जिन्होंने इस क्षेत्र में वैष्णव धर्म का उपदेश दिया था। सर्जनात्मक जीवनी विधा का इस कृति में सफल उपयोग है और इसमें सर्जक की स्वतंत्रता का पूरा-पूरा लाभ उठाया गया है। आपके *धन्य नर तोनु भाल* ने शंकरदेव को आधुनिक मनुष्य को उपलब्ध कराया है और सम्भव है कि हम में से कुछ के लिए, आपके शंकरदेव वास्तविक हों और दंतकथा तथा इतिहास के पवित्र सान्निध्य का स्थान ले सकें।

1972 में अब्दुल मलिक के उपन्यास *अघरी आत्मार काहिनी* को

subscriptions are subsumed under a liberal humanism.

Not for him, therefore, is an idiom of desperation. The fashionable alone cannot lure him. He does not feel alienated even though he accepts, in his dignified stride, the essential loneliness of the gifted. He is at one with his environs, with his society. 'I like people', he says, 'who have a profound involvement in life, those who can respond to the sorrows of living.' He is at one with nature and finds a simple delight in the obvious attractiveness of the river and the river and the rains figure significantly and prominently in his fiction as do floods and the occasional dry spell.

What keeps him alive, he says, is the reassurance of the soul. He is the supreme critical realist in Assamese fiction who is equally at home in — to him — the cognate worlds of the town and the village, of the Muslims and the Hindus. His 'romantic' tales perhaps express the truth of history and society better than the so-called politically committed writing or the dreary abstractions of reports. He affords strife-torn people an ease and an assurance which are far from, and even alien to, escapism. His historical sense and a mastery of tradition are implicit in his idiom and vocabulary which are only at one remove from the folk. All the mores and customs of his times and people matter to him and he avidly follows them. The conflict and togetherness in society inform his writings and his characters are moulded by them.

Abdul Malik, however, never feels superior to his characters. Consequently, nothing becomes ridiculous, neither the old, niggardly Safiat or the eccentric do-gooder Chandra in *Surujmukhir Swapna*, Deka Gosain in *Nal-Birina-Khagori* (Sedge and Reed), Kamran in *Rupaboreer Palas* and the host of other characters that people his fictive world. There are no type characters though. Abdul Malik is never overtly experimental, he is happy to tell his tales simply, relying on linear narrative movement. The locales change and the characters, with the locales. One may see some family resemblance here and there but they are all different like their stories.

His novels and stories, while responding to contemporary reality, override the dictates of time and remain as contemporary classics. Abdul Malik is the most popular Assamese novelist and all his books continue to attract readers of all ages and dispensations. He has written a novel on the life and works of Sankaradeva, the great fifteenth century saint-poet of Assam who had preached Vaishnavism in this area. The book exploits the genre of the creative biography and takes complete but not unwarranted advantage of the creator's freedom. His *Dhanya Nara Tonu Bhaal* (Blessed is the Flesh) has made Sankaradeva available to the modern man and may be, to some of us, his Sankaradeva is the real one and can supersede the hallowed presence of legend and history.

In 1972, Abdul Malik's *Aghari Atmar Kahini* (The Story

साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1977 में आप असम साहित्य सभा के अध्यक्ष बने और 1984 में आपको पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1992 में आपको पद्भूषण से विभूषित किया गया। 1965 में रूस के यात्रावृत्तांत *मजोत माथो हिमालय* (बीच में केवल हिमालय खड़ा है) के लिए आपको सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1988 में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय ने आपको डि.लिट. की उपाधि से सम्मानित किया। 1981 में आप सूचना और प्रसारण विभाग और पश्चिम बंग सरकार द्वारा ईस्टर्न इंडिया कल्चरल इंटिग्रेशन एवार्ड से सम्मानित किये गये। 1994 में आपको असम घाटी साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा 1995 में अज़ान फकीर पुरस्कार। 1992 और 1993 में आपको क्रमशः 'हार्मनी एवार्ड' और 'असम एक्सप्रेस एवार्ड' मिला। 1996 में आपको मूनलाइट मीडिया पुरस्कार प्रदान किया गया। असम साहित्य सभा ने आपको 1997 में साहित्याचार्य की उपाधि से विभूषित किया। 1999 में आप शंकरदेव पुरस्कार से सम्मानित किये गये।

अब्दुल मलिक मनुष्य का उत्सव मात्र उसकी सम्भावनाओं में नहीं, बल्कि उसकी वास्तविकताओं में मनाते हैं, भले ही वे कितने सांसारिक या नगण्य क्यों न हों। सामान्य में आपकी निमग्नता आपकी शैली के समक्ष कठिन माँग रखती है। आपने एक ऐसे गद्य की रचना की है जो प्रायः शिखर की ओर जाता है और बदले में आपको तुच्छ से परहेज करने में सहायता करता है। यह एक बद्धमूल और उदार शैली है जो वाद-विवाद वाले विचारों से भी समान रूप से संवाद करती है। इसे रोमांटिक बनाकर आप ऊँचाई प्रदान करते हैं। आप स्वयं को कथावाचक कहते हैं और आपकी कथाएँ, आपके उपन्यास और आपकी कहानियाँ अपनी चपल तीव्रता में, अपने विश्वासघात और अपनी कुंठा में, अपनी ख़ामोश उदासी में प्रेम को सम्बोधित हैं। आपकी विशिष्टता है—उदास का दुखांत में सहज पर्यवसान। आपके नायकों के पास अपने मनोवेगों के तुल्य शब्द नहीं, वे एक कतरी हुई प्रकार्यात्मक भाषा बोलते हैं लेकिन पाठक बराबर उनकी अनुभूतियों की अनुच्चरित गहराइयों से परिचित हैं। *सूरजमुखीर स्वप्न* में गुलास की तरह वे प्रायः सामान्य, अशिक्षित आत्माएँ है और नई कृषिभूमि के लिए जंगल साफ़ करने के अतिरिक्त वे बाहर आने का जोखिम नहीं उठातीं, लेकिन वे मानवीय चिन्ताओं की समूची शृंखला को खण्डित करने में सक्षम होती हैं जो प्यार और देखरेख से शुरू और ख़त्म होता है।

अब्दुल मलिक की कविता के सरोकार साधारण हैं। असमिया लोकाचारों के प्रति सच्चा बनते हुए, जहाँ सभी समुदाय समान भाषा और रीतिरिवाजों का साझा करते हैं, आप अपने चरित्रों को सामान्यता की पृष्ठभूमि के समक्ष प्रस्तुत करते हैं, लेकिन आपकी कविता में शहरी यथार्थ प्रमुखता से उभर कर सामने आता है—अपरिहार्य विडम्बना के साथ जो कि शहरी जीवन की जटिलताओं के प्रति आपकी जागरूकता का परिचय देता है। आधुनिक कविता के मुहावरे पर आपकी गहरी पकड़ आपके तीन संकलनों को ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण बनाने से कुछ अधिक ही करती है। आपके सरोकार, यद्यपि गद्य माध्यम की माँग करते प्रतीत होते हैं। आप कोई अकथनीयता के प्रवक्ता नहीं हैं और आपका लेखन अनुकूल हास और वागवैदग्ध्य से परिपूर्ण है, आप प्रसुप्तावस्था में भी अपनी विडम्बनात्मक जागरूकता बनाये रखना चाहते हैं।

of a Migrant Soul), won the Sahitya Akademi Award. He became the President of the Assam Sahitya Sabha in 1977 and was honoured with a Padmashree in 1984. In 1992 the Padmabhushana was conferred on him. His travelogue on Russia *Majot Matho Himalay* (Only the Himalayas Stand Between) won the Soviet Land Nehru Award in 1965. The Dibrugarh University honoured him with a D. Litt. in 1988 and the Information and Broadcasting Department and the Government of West Bengal conferred on him the Eastern India Cutlural Integration Award in 1981. He won the Assam Valley Literary Award in 1994 and the Azan Fakir Award in 1995. The Harmony Award and the Assam Express Award came his way in 1992 and 1993 respectively. He got the Moonlight Media Award in 1996. The Assam Sahitya Sabha conferred on him Sahitya Charya in 1997 and he won the Sankaradeva Award in 1999.

Abdul Malik celebrates man, not in his possibilities alone, but in his realities, however mundane and insignificant they may be. His immersion in the ordinary makes crucial demands on his style and he has fashioned a prose which is often heightened which in turn helps him eschew the banal. It is a rooted and accommodating style that responds alike to contending concerns. He heightens it by romanticising — and he romanticises by easily making love inform all facets of living. He calls himself 'a teller of tales' and his tales, his novels and short stories, address love in its giddy intensity, in its guiles and frustrations, in its quiet sadnesses. His forte is the easy graduation of the sad into the tragic. His heroes do not have the words equal to their passion; they speak a clipped, functional tongue but the reader is constantly aware of the unspoken depths of their feelings. They are often simple, unlettered souls like Gulas in *Surujmukhir Swapna* (Longing for Sunshine) and they do not really venture out except to clear-fell the jungle for new farmland but they manage to traverse a whole range of human concerns that begin and end with love and care.

Abdul Malik invests quotidian concerns with poetry. True to the abiding Assamese ethos where all communities share the same language and mores, he presents his characters against this background of commonality; but in his poetry urban realities dominate, with the inevitable irony which entails his awareness of the complexities of urban living. His mastery of the idiom of modern poetry makes his three anthologies more than historically significant. His concerns, however, seem to demand the medium of prose. He is no prophet of incommunicability, and while everything he writes is replete with genial humour and wit, he wants to hold his ironic awareness in abeyance.

अब्दुल मलिक की विचारों के प्रति प्रतिक्रिया सर्जनात्मक होती है और विभिन्न विषयों और क्षेत्रों पर मज़ेदार बातों का आपका व्यापक भण्डार आपको नवजागरण का एक दुर्जेय व्यक्तित्व बना देता है। वे तभी कोई विचार स्वीकार करते हैं जब वे जनता में घुलमिल जाने वाले हों, अन्यथा वे अपने दाय—जनता, किसान वर्ग जहाँ से वे आते हैं—की भर्त्सना करते हुए उसकी समाप्ति कर देते हैं। आप केवल मानसिक छापामारी से परहेज करते हैं और हमारे क्लासिक साहित्य जैसी स्थितियों में ही विचारों से मुठभेड़ करते हैं। आपके पात्र हाड़-माँस से बने लोग हैं और सभी अविश्वसनीय रूप से मानवीय है। यह आपको सम्पूर्ण मानवीय भूदृश्य प्रदान करता है, जहाँ ख़ून, कल्पना और प्रतिभा साथ-साथ दौड़ते हैं।

इसी बहुमुखी प्रतिभा के नाते साहित्य अकादेमी सैयद अब्दुल मलिक को अपने सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, से विभूषित करती है।

Abdul Malik responds to ideas creatively and his vast repertory of titbits on diverse topics and areas make him a formidable Renaissance personality. However, he accepts ideas only when they are diffusible in the masses or else, he suspects, he will end up denouncing his inheritance — the masses, the peasantry that he comes from. He avoids merely cerebratory forays, and encounters ideas only in situations in the manner of our classical literature and his characters are flesh and blood people who are all too fallibly human. This affords him the complete human landscape where blood, imagination and intellect run together.

It is on this versatile genius, Syed Abdul Malik, that the Sahitya Akademi confers its highest honour, its Fellowship, today.

Acceptance Speech

Syed Abdul Malik

Sahitya Akademi is a well established and well known literary organization of India. I have been associated with this organization for so many years. The various plans and programmes of the Akademi have contributed valuable literary works—original works, translations, compilations etc. At the bahest of the Akademi, I translated some important books from Bengali, Hindi, Urdu etc., into the Assamese language. I have also written books in Assamese for the Akademi.

I am thankful to the Akademi for conferring on me the prestigious Fellowship of the Akademi this year. I am sure this conferment of Fellowship will enable me to render some useful assistance to the materialisation of the programmes of the Akademi, and also to contribute my own share in building up the great literary organization.

I express my gratitude to the Akademi for its generous decision in the matter of offering the Fellowship to me and providing me with an opportunity to render my service to the growth and development of Indian literature.

With thanks to all.